Indian philosophy

आलस्य, निंद्रा, मुद्धा, अज्ञान आदि आ जाते है यह कृष्ण वर्ण है। संक्षेप मे सत्व गुण सुखदायक, प्रकाशक श्वेत और लघु है, रजो गुण दुःखदायक है, तथा तमो गुण अवरोधक मोहात्मक तथा कृष्ण है। इन तीनो गुणो के सुख-दुःख मोह रूप होने से ही सारा जगत सुखात्मक दुःखात्मक तथा मोहात्मक है इस प्रकार प्रकृति के ये तीनो गुण जगत के सभी पदार्थो के कारण है संसार की सभी वस्तुऐ सुखरूप, दुःखरूप तथा मोहरूप है, इनके अतिरिक्त किसी वस्तु या पदार्थ का कोई दूसरा रूप नही हो सकता। उदाहरणस्वरूप नदी तैरने वालों के लिए सुखदायक है डूबने वालो के लिए दुःखदायक है। नदी मे रहनेवाले जीवो के लिए तटस्थ तथा उदासीन है संगीत रसिक के लिए आनन्ददायक बीमार व्यक्ति के लिए कष्टदायक, पशुवादी के लिए उदासीन भाव को उत्पन्न करनेवाला है। इससे स्पष्ट होता है कि संसार के सभी पदार्थ त्रिगुणात्मक है क्योंकि त्रिगुणात्मकता प्रकृति से उत्पन्न है।

गुण का पारस्परिक संबंध — इस तरह हम देखते है कि सांख्य तीन गुण एक-दूसरे के विरोधी है सत्व गुण प्रकाश स्वरूप है तो तम गुण अंधकार स्वरूप है पहला श्वेत है दूसरा काला। पहला लघु है तो दूसरा गुरु (भारी) है, सत्व गुण सुखदायक है तो रजोगुण दुःखदायक है पहली गतिहीन है तो दूसरी गतिशील है। प्रश्न यह कि तीनों गुण एक दूसरे के विरोधी है तो मिलकर कैसे कार्य करते है, सृष्टि कैसे होती है? इस प्रश्न के उत्तर मे सांख्य कहते है कि ये तीनो गुण विरोधी होते हुए भी आपस मे मिलकर कार्य करते है। इन तीनों का उद्देश्य एवं प्रयोजन एक है। अतः सामान्य उद्देश्य या प्रयोजन की प्राप्ति के लिए ये मिलकर कार्य करते है इसे

तीनो गुणो के द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति होती है।

विरोधता सहचार सहायक अभिभावक

एक रूपक के द्वारा सांख्य स्पष्ट करते है। जिस प्रकार तेल बत्ती और दीप का स्वभाव अलग-अलग होने पर भी ये तीनों मिलकर प्रकाश उत्पन्न करने का कार्य करते है उसी प्रकार तीनों गुणो का स्वभाव विरोधी होने पर भी ये तीनो मिलकर संसार के सभी पदार्थो को उत्पन्न करते है। अतः संसार के सभी पदार्थो को उत्पन्न करने के समान प्रयोजन में ही ये विरोधी होकर भी ये मिलकर कार्य करते है अर्थात सहचारी है, अतः विरोध रहते हुए भी सहचार इनका सर्वप्रथम स्वभाव है जिस प्रकार स्त्री और पुरुष के स्वरूप मे विरोध होते हुए भी संयोग और संचार होता है उसी प्रकार गुणो मे भी इन गुणो के संबंध की दूसरी विशेषता यह है कि यह सहचार के होने होने साथ ही एक दूसरे के सहायक भी है। सृष्टि कार्य को उत्पन्न करना इन तीनों का स्वभाव है, परन्तु इन तीनो कि सहायता से ही सृष्टि कार्य हो सकता है। इनमे से किसी एक के अभाव मे सृष्टि कार्य नही हो सकता। अतः सृष्टि कार्य के लिए तीनो गुण समान रूप से महत्वपूर्ण है तथा एक-दूसरे के सहायक है इसे एक उदाहरण के द्वारा सांख्य उत्पन्न करते है। वे कहते है कि तीन दंडो कि सहायता से एक एक करके घट टिका रहता है किसी एक अभाव मे घट नही टीका रह सकता, साथ - ही साथ घट के टीके रहने मे प्रत्येक दण्ड अन्य दो दण्डों कि सहायता करता है दण्डो के समान गुण भी एक दूसरे के सहायक है, इन गुणो के संबंध मे तीसरी विशेषता यह है कि ये गुण अभिभावक है ये एक-दूसरे को अभिभूत करके ही अपने स्वरूप को स्पष्ट करते है। उदाहरणार्थ सत्व गुण रज और तम को ही अभिभूत करके ही इ: त्व

PAGE NO. :
DATE / /20

या विवाद को उत्पन्न कर पाता है, यदि गुण एक दूसरे को अभिभूत न करे तो वह अपने स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकता। इस प्रकार सहचार्य होना सहायक होना अभिभावक होना गुणों कि संबंध कि विशेषताएँ है,

वैशेषिक का मत